PATNA WOMEN'S COLLEGE AUTONOMOUS 1940

Hindi
Explore–Journal of Research
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
https://www.patnawomenscollege.in/journal

''शरणार्थी'': विभाजन की त्रासदी का जीवंत प्रलेख

• स्मृति कुमारी • अर्चना कुमारी • मनीषा साह

Received : November 2019
Accepted : March 2020
Corresponding Author : दीपा श्रीवास्तव

सारांश : *देश विभाजन भारत के इतिहास का वह काला अध्याय है, जिसकी परिणिति व्यापक रक्तपात और दो सम्प्रदायों के बीच दुराव, संदेह, डर, घृणा आदि मानसिक अवधारणाओं में हुई। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक, साम्प्रदायिक और मानवीय मूल्यों में जो ह्रास हुआ, उसकी सशक्त अभिव्यक्ति 1948 में प्रकाशित 'शरणार्थी' में हुई है, जो सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' रचित कविताओं और कहानियों का श्रेष्ठ संकलन है।*

*इसमें संकलित कहानियाँ हैं– **'लेटर बॉक्स', 'बदला', 'मुस्लिम–मुस्लिम भाई–भाई', 'शरणदाता'** एवं **'रमन्ते तत्र देवताः'** एवं कविताएँ हैं – **'मानव की आँख, 'पक गई खेती', 'ठाँव नहीं', 'हमारा रक्त', 'मिरगी पड़ी', 'रूकेंगे तो मरेंगे', 'समानान्तर साँप', 'गाड़ी रूक गई', 'श्री मद्धर्मधुरंधर पांडा', 'कहती है पत्रिका', एवं 'जीना है बन सीने का साँप'।** विभाजनोपरांत मनुष्यों की परिवर्तित मानसिकता तथा विघटित मूल्यों से उत्पन्न निराशा, द्वेष और घृणा के सजीव चित्रण के साथ विभाजन की समस्त त्रासदी का केन्द्रीकरण अज्ञेय ने इस कृति में किया है। **'शरणार्थी'** मानवीय मूल्यों में छिपे अंकुरों की सशक्त अभिव्यक्ति की विलक्षण प्रस्तुति है, जिसमें धार्मिक अंधड़ से उत्पन्न विभीषिकाओं को चित्रित किया गया है। वर्तमान में भी इस कृति में वर्णित अमानवीय घटनाओं की पुनरावृत्ति किसी न किसी रूप में हो ही रही है। भोगे हुए यथार्थ पर आधारित इस कालजयी रचना में शाश्वत जीवन मूल्यों को पुनर्जीवित करने का जो संदेश दिया गया है, वह इसे वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पूर्णतः प्रासंगिक बनाता है। समग्रतः इसे विभाजन की त्रासदी का जीवंत प्रलेख कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।*

संकेत-शब्द (Keywords) – *देश विभाजन, शरणार्थी, मानवीय मूल्य, प्रासंगिकता।*

स्मृति कुमारी
B.A. III year, Hindi (Hons.), Session: 2018-2021,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

अर्चना कुमारी
B.A. III year, Hindi (Hons.), Session: 2018-2021,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

मनीषा साह
B.A. III year, Hindi (Hons.), Session: 2018-2021,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

दीपा श्रीवास्तव
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना – 800 001, बिहार, भारत
E-mail : deepa.hindi@patnawomenscollege.in

भूमिका:

खोखली नैतिकता और व्यावसायिकता से ऊपर उठकर परिस्थितियों से उत्पन्न मानसिक द्वंद्व, मानवीय संवेदना, जीवन मूल्यों और वैयक्तिक चेतना जैसे संवेदनशील मुद्दों को रचना का आधार बनाने वाले विलक्षण साहित्यकारों में सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का नाम अग्रणी है। देश विभाजन भारत के इतिहास का वह काला अध्याय है, जिसकी परिणिति व्यापक रक्तपात में ही नहीं हुई बल्कि दो संप्रदायों के बीच दुराव, संदेह, त्रास, डर, घृणा, आदि मानसिक अवधारणाओं में भी हुई।

देश विभाजन के पश्चात् जो उथल–पुथल हुआ, सामाजिक, सांप्रदायिक और मानवीय मूल्यों के स्तर पर जो ह्रास हुआ, उसकी भी सशक्त अभिव्यक्ति कई साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में की। 1948 में **'शरणार्थी'** नाम से प्रकाशित संग्रह अज्ञेय की कविताओं और कहानियों का संकलन है, जिसमें अपने वतन से उजड़े हुए लोगों की अन्तर्वेदना से जुड़ी करूणा, अपहृत औरतों तथा बलात्कार की घिनौनी वारदातों से जुड़ी अमानवीयता की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। यह कृति विभाजन के पश्चात् के भयाक्रांतता का, बदली हुई परिस्थितियों के कारण मनुष्य की परिवर्तित मानसिकता तथा विघटित मूल्यों से उत्पन्न निराशा, द्वेष, घृणा और द्वंद्व का सजीव चित्रण उकेरती है।

शरणार्थी में संकलित कहानियों में **'लेटर बॉक्स', 'बदला', 'मुस्लिम–मुस्लिम भाई–भाई', 'शरणदाता'** एवं **'रमन्ते तत्र देवताः'** तथा कविताओं में **'मानव की आँख, 'पक गई खेती', 'ठाँव नहीं', 'हमारा रक्त', 'मिरगी पड़ी', 'रूकेंगे तो मरेंगे', 'समानान्तर साँप'', 'गाड़ी रूक गई', 'श्री मद्धर्मधुरंधर पांडा', 'कहती है पत्रिका', एवं 'जीना है बन सीने का साँप'** विभाजन की पीड़ा पर आधारित है। विभाजन के बाद की विभीषिका का मार्मिक चित्रण, विस्थापन, क्रूर हत्या प्रसंग, भाग – दौड़ एवं विभाजन की समस्त त्रासदी का केन्द्रीकरण अज्ञेय ने **'शरणार्थी'** में किया है।

'शरणार्थी' का उद्देश्य विभाजन के उपरांत सामाजिक समस्याओं का चित्रण करना है। इस शीर्षक की सार्थकता हम इस रूप में समझ सकते हैं– लोग स्वतंत्र देश के नागरिक होकर भी शरण के मोहताज है एवं ठांव ढूंढते फिर रहे हैं। इस पर लेखक की पंक्तियाँ कुछ इस प्रकार हैं :–

''संचित प्रपंच के सहारे
जीना है हमें तो, बन सीने का सांप उस
अपने समाज के
जो कि हमारा एकमात्र अक्षन्तत्य शत्रु है
क्योंकि हम आज हो के मोहताज
उस के भिखारी शरणार्थी हैं।''

उद्देश्यः

1. **सामान्य**

   विभाजनोपरांत हुई अमानुषिक घटनाओं के फलस्वरूप विघटित जीवन मूल्यों के परस्पर संघर्ष के मध्य सात्विक भावों की स्थापना करने का संदेश देना इस शोध – पत्र का सामान्य उद्देश्य है।

2. **विशिष्ट :–**

   अलगाववाद, अविश्वास, सांप्रदायिक वैमनस्य और हिंसा से दिग्भ्रमित युवा पीढ़ी में सात्विक और शाश्वत भावों को पुनर्जीवित करने का प्रयास इस शोध – पत्र का विशिष्ट उद्देश्य है।

अध्ययन पद्धतिः

परियोजना के लिए शोध प्रविधि की द्वितीयक पद्धति का प्रयोग किया गया है। तथ्यों के संग्रह के लिए अध्येय रचनाओं पर किए गए पूर्व शोध – ग्रंथों, संबंधित पुस्तकों, पत्र – पत्रिकाओं एवं इंटरनेट की मदद ली गई है।

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का जन्म 7 मार्च 1911 को उत्तर प्रदेश के कसया (वर्तमान में कुशीनगर) गाँव में हुआ। अज्ञेय उस काल के एक ऐसे राजनीतिक आंदोलन के अर्न्तगत विकसित हुए थे, जिसकी तत्कालीन गांधीवादी राजनीति से कोई समानता नहीं थी। उनके व्यक्तित्व में साहित्यकार की कोमलता और क्रांतिकारी की उग्रता का अपूर्व समन्वय है। इस संदर्भ में डॉ० भरत सिंह लिखते हैं– **''बीस वर्षीय विप्लवी युवा आग्नेय अज्ञेय क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने के कारण चार साल जेल में रहे और एक साल नजरबंद। राष्ट्रद्रोह के मुकदमें में दिल्ली जेल की काल–कोठरी में तीन साल (1931–1933) तक इसी सिलसिले में बंदी बनाकर रखे गये।''**

(सिंह : 2007, 32)

अज्ञेय ने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से लगभग आधी शताब्दी तक हिन्दी साहित्य को आंदोलित किया। कवि के साथ–साथ प्रख्यात कथाकार, समीक्षक, सुयोग्य संपादक और पत्रकार चिंतक–विचारक भी हैं। अज्ञेय की कहानियों

का अनुवाद भी कई भाषाओं में हुआ है। कवि अज्ञेय ने पद्य और गद्य दोनो काव्य रीतियों व काव्यशिल्पों का प्रयोग किया है।

डॉ० नगेन्द्र के शब्दों में **'पत्रकारिता के क्षेत्र में इन्हें 'दिनमान' और 'प्रतीक' के संपादक–रूप में ख्याति प्राप्त हुई है। 'तार सप्तक', 'दूसरा सप्तक', 'तीसरा सप्तक', 'चौथा सप्तक', और 'रूपांबरा' इनके द्वारा संपादित काव्य संकलन हैं।''**

(नगेन्द्रः 2018, 618)

'शरणार्थी' में संकलित कुल 11 कविताओं में अज्ञेय ने विभाजन में पनपी द्वेष भावना, लोगों की दोहरी मानसिकता, घटना का मूल जड़ एवं राजनीतिक स्थितियों का उल्लेख किया है। **'शरणार्थी'** की प्रथम कविता **'मानव की आँख'** में कवि ने सांप्रदायिक दंगों में मनुष्यों के विषाक्त नेत्रों को उल्लेखित किया है, जिसमें मानव का एक–दूसरे से सरोकार तो होता है किन्तु आँखों में व्याप्त घृणा के साम्राज्य की झलक मिल ही जाती है। देश का विभाजन भारतीय राजनेताओं की नीयत के खोट से पैदा हुआ था, जिसे साम्राज्यवाद ने भरपूर शह दी थी; इसे इन्होंने **'पक गई खेती'** में दर्शाया है।

इसी तरह **'श्री मद्धर्मधुरंधर पंडा'** में इन्होनें राजनीतिक व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह खड़ा किया है कि राजनेताओं के कानों पर जूँ भी तभी रेंगती है, जब सीधा दाग सत्ता पर लगता है। औरतों के तीन, तीस या तीस हजार के आँकड़ों में जीवन मूल्यों का निर्धारण किया जाना या लोगों का हजारों – हजार की संख्या में मारा जाना राजनेताओं के लिए मामूली सी बात थी। **'ठांव नही', 'रूकेंगे तो मरेंगे'** तथा **'गाड़ी रूक गई'** में विध्वंस का सजीव चित्रण प्रकट होता है। कैसे लोग अपने अहं भाव को किनारे रख जान की सुरक्षा हेतु त्राहि – त्राहि मचा रहे थे एवं एक दूसरे के धर्म के समूल नाश हेतु रेलगाड़ी के हर डब्बे में लाश पहुँचा रहे थे।

मिरगी एक ऐसी बीमारी है, जिसका दौरा पड़ने पर लोग अपनी चेतना खो देते हैं। अज्ञेय ने अपनी कविता **'मिरगी पड़ी'** में इन्ही भावों को शब्द देते हुए कहा है कि मानो संपूर्ण राष्ट्र को ऐसी ही किसी मिरगी के दौरे ने ग्रस लिया है, जिससे संस्कृति की चेतना नष्ट हो गई है एवं मनुष्यता का हनन होता जा रहा है।

कवि ने उन्मादियों द्वारा बहाये रक्त को 'हमारा रक्त' कहा, जिसका रंग एक समान ही लाल है, किसी धर्म–विशेष के आधार पर नहीं। मनुष्यों का रक्त घृणा के विष में निमग्न हो निस्तेज और निवीर्य हो गया है।

अज्ञेय ने व्यंग्य करने के लिए प्रतीकों का भी सहारा लिया है। बिम्बवाद तथा प्रतीकवाद जैसे काव्यांदोलनों के प्रभाव में बिंब ओर प्रतीक योजना को प्रधानता मिली है। **'समानांतर साँप'** एवं **'जीना है बन सीने का साँप'** में **'साँप'** को प्रतीक बनाकर ही इन्होंने व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति की है। 'समानांतर साँप' में इन्होंने हिंदू–मुस्लिम संप्रदाय को साँप की उपमा दी है, जो दिशाविहीन, घृणित, पतित, बेबस हो गुंजलक में उलझा पड़ा है और जिसकी फुंकार भी उसके खुद की नहीं है। फिर भी कवि समन्वय की बात करते हुए कहते हैं कि :–

मनुजता के पतन की इसी अवस्था में भी
साँप दोनों है पतित दोनों
तभी दोनों एक।

अंत में कवि **'कहती है पत्रिका'** और **'जीना है बन सीने का साँप'** के माध्यम से अपनी वैयक्तिक अनुभूति समष्टि से कराते हुए एकात्मकता और वैयक्तिकता को नया आयाम देते हैं। इन्होंने अपने ही समाज को एक मात्र अक्षन्तव्य शत्रु माना है, जिसमें ठौर ले सकने को भी हम मोहताज है एवं शरणार्थी बने घूम रहे हैं। हमसब के सब मेहतर हो चुके हैं एवं अपने आजाद देश के नागरिक होने पर भी हमें शरण ढूँढना पड़ रहा है, हम अपने मन का मैला ढ़ोते हुए दूसरे के प्रति द्वेष भावना लिए फिर रहे हैं। कवि का क्षोभ इन पंक्तियों से प्रकट होता है :–

मेहतर तो सब रहे हमारे
हुए हमारे फिर शरणदाता
जनम – जनम तक जुगों –जुगों तक
मिलें उन्हें अधिकार, एक स्वाधीन राष्ट्र का
मैला ढोवे?

अज्ञेय की कविताओं में एक तरफ तो सांप्रदायिक वैमनस्य एवं विध्वंस का मार्मिक चित्रण है, दूसरी तरफ मानवता व व्यक्तित्व के तेजस का अंश बचाये रखने का सरोकार है। उसके साथ व्यंग्य, वक्रोक्ति, उक्ति वैचित्र्य को आक्रोश की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में स्वीकार किया गया है।

'शरणार्थी' में विभाजन की विभीषिका और उससे जुड़ी हुई मनःस्थितियों को चित्रित करती पाँच कहानियाँ संकलित है।

'शरणदाता', 'बदला', 'लेटर बॉक्स', 'रमन्ते तत्र देवताः' और 'मुस्लिम–मुस्लिम भाई–भाई। डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी ने अज्ञेय की कहानियों को **'विषय परक'** बताते हुए जिन चार सोपानों में विभक्त किया है, उनमें शरणार्थी में संकलित कहानियाँ तीसरे सोपान के अंतर्गत आती हैं, जो देश विभाजनोपरान्त शरणार्थी समस्या को लेकर लिखी गई है। डॉ० भोलाभाई पटेल के शब्दों में, **''रचनाकाल की दृष्टि से ये कहानियाँ सैनिक जीवन से संबद्ध कहानियों के समय की ही है''**, लेकिन जैसा की स्वयं अज्ञेय कहते हैं, **''एक बार फिर ये कहानियाँ आहत मानवीय संवेदना की और मानव मूल्यों के आग्रह की कहानियाँ हैं।''**

(पटेल : 2009, 281, 298)

विभाजन की थीम पर लिखी इन कहानियों में मानवीय करूणा की झलक मिलती है, परन्तु यह करूणा किसी एक सतह पर ठहरी हुई नहीं है, कई आयामों को अपने भीतर समेटे हुए है। इसके भीतर बँटवारे से उत्पन्न संत्रास के भीतर से उपजी परिवर्तित संबंधों और विघटित मूल्यों से निष्पन्न करूणा, विभाजन से निर्मित क्रूर मानसिकता, अपनी जमीन, वतन से उजड़े हुए लोगों की अंतर्वेदना से जुड़ी करूणा इत्यादि है। डॉ० भोलाभाई पटेल के अनुसार **''इस समूह की सारी कहानियों का विषय विभाजन की विभीषिका से ग्रस्त मानवीय संवेदना की उत्कटता और उन्नयन को प्रकट करना है।''**

(पटेल : 2009, 298)

इन कहानियों के पात्रों द्वारा अज्ञेय ने विभाजन की पीड़ा और भीषण नरसंहार में भी मानवीय करूणा की अनेक अर्थ छवियों की शाश्वतता को चरितार्थ किया है।

अज्ञेय की कहानी 'शरणदाता' में बाहरी परिस्थितियों के दबाव में संबंधों और मूल्यों के विघटित होने की प्रक्रिया के बीच मानवीय करूणा की शाश्वतता के प्रति आस्था के स्वर की गूंज है। यह कहानी सांप्रदायिकता की आग में झुलसे मानवों की कहानी है।

कहानी की अमानुषिकता को संतुलित करने के लिए लाहौर से जैबू की चिट्ठी आना – **''सिर्फ यह इल्तजा करती हूँ कि आपके मुल्क में कोई अल्पसंख्यक मजलूम हो तो याद कर लीजिएगा। इसलिए नहीं कि वह मुसलमान है, इसलिए कि आप इंसान है।''**

(अज्ञेय : 2009, 39)

'बदला' कहानी सांप्रदायिकता का एक अलग ही रंग प्रस्तुत करती है। इसमें दिखाया गया है कि यदि मनुष्य में मानवता एवं दूसरे के प्रति कल्याण की भावना विद्यमान हो तो वह किसी भी हालत में जिंदादिल बना रह सकता है। बूढ़े सिख का लक्ष्य विभाजन की त्रासदी की भोगती घायल मानवता की रक्षा का है। सिख निराशा और घृणा के अमानवीय माहौल में जीवित मानवीय चेतना का प्रतीक है।

''सिख का चरित्र इस तथ्य का परिचायक है कि अपना सब कुछ खोकर भी मनुष्य अपना विवेक, विश्वास और संतुलन रख सकता है। उसका लक्ष्य विभाजन की त्रासदी को भोगती घायल मानवता की रक्षा का है। सिख निराशा और घृणा के अमानवीय माहौल में जीवित मानवीय चेतना का प्रतीक है।''

(अग्रवालः 1992, 62)

'रमन्ते तत्र देवताः' कहानी में विभाजन के संदर्भ में हिंदू धर्म की जड़ता, पाखंड और रूढ़िवादिता पर प्रहार करते हुए अपहृत स्त्री की वेदना को व्यक्त किया गया है। यह कहानी विभाजनकालीन अमानवीय परिवेश की पृष्ठभूमि में हिंदू समाज की खोखली मान्यताओं, विघटित मानव–मूल्यों तथा स्त्री–पुरूष के संबंध में उसके दोहरे विचार–मूल्यों का व्यंग्यपूर्ण उद्घाटन है। स्त्री का चरित्र समाज की दृष्टि में इतना कच्चा धागा है कि केवल संदेह मात्र का झटका ही उसे जीवन जीने के अधिकार से वंचित कर देता है।

डॉ० भोलाभाई पटेल के शब्दों में – **''क्या मुसलमान और क्या हिंदू, विभाजन जैसे विभ्राट में मानवीयता कैसे दुष्कर हो जाती है, 'रमन्ते तत्र देवताः' में उसका तीखा आलेखन है।**

(पटेल : 2009, 299)

अज्ञेय की कहानी **'मुस्लिम – मुस्लिम भाई–भाई'** में मुस्लिम स्त्रियों सकीना, अमीना, और जमीला द्वारा विभाजन से उत्पन्न मनुष्य की मानसिकता के विभिन्न पक्षों को उद्‌घाटित किया गया है। इस कहानी में साधारण एवं अभिजात्य वर्ग की एक विचित्र रस्साकशी दृष्टिगोचर होती है। इसका स्वर व्यंग्यात्मक है। यह कहानी डर एवं डर से उत्पन्न अनेकानेक मानसिक विकृतियों का संकेत करती है। कहानीकार ने इस कहानी में निम्न वर्ग की स्त्रियों की वेदना के साथ सामान्य एवं साधनविपन्न लोगों की तरफदारी की है। इस संदर्भ में भोलाभाई पटेल कहते हैं – **''संकटकालीन स्थिति में इंसानियत की जो भी विरूपता प्रकट होती है, यह व्यंग्य–प्रधान कहानी उसी की है।''**

(पटेल : 2009, 299)

अज्ञेय की कहानी **'लेटर बॉक्स'** भी परिवेश के दबाव से आक्रांत निरीह मनुष्य की करूणा का चित्रण है। शेखपुरे का रोशन नामक एक बालक कैम्प में अपने पिता की प्रतीक्षा कर रहा है। उसकी माँ मर चुकी है। वह अपने पिता तक पत्र पहुँचाना चाहता है, लेकिन पता उसे मालूम नहीं। चेहरे पर सीमाहीन धैर्य का भाव लिए लेटर बॉक्स के पास खड़ा वह उस व्यक्ति की प्रतीक्षा कर रहा है, जो उसे बता दे कि वह अपनी चिट्ठी किस पते पर छोड़े ताकि वह बाबूजी को मिल जाए।

लेटर बॉक्स के सामने खड़ा वह प्रतीक्षातुर बालक विभाजन की विभीषिका का मूर्त विग्रह बनकर पाठकों के सामने सदा के लिए खड़ा रह जाता है।

निष्कर्ष :

'शरणार्थी' की मूल्य श्रेणी परिस्थितियों के जीवंत और कलात्मक प्रस्तुतीकरण से समझी जा सकती है। यह मानवीय मूल्यों के लिए लड़ने वालों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने वाली सशक्त रचना है, जिसमें धार्मिक अंधड़ से उत्पन्न विभीषिकाओं का चित्रण है। इसमें मानवीय मूल्यों की ध्वस्तता और संप्रदायों से ऊपर उठकर मनुष्य मात्र के प्रति आत्मीयता दर्शाने वाला मूल्य विषयक सरोकार भी है। इस विषय में अज्ञेय कहते हैं –

''मेरी जिज्ञासा और दिलचस्पी आदर्शपरक रचना से बढ़ती हुई क्रमशः यथार्थोन्मुख होती गई और भी स्पष्ट। यह कि जिस यथार्थ की ओर मैं अधिकाधिक बढ़ा वह 'बाह्यमय' या 'भौतिक' या 'सामाजिक' यथार्थ से पहले अभ्यन्तर, मानस अथवा मनोवैज्ञानिक यथार्थ था।''

(भूमिका ; अज्ञेय की संपूर्ण कहानियाँ)

किसी भी रचना की श्रेष्ठता का एक निकष यह भी है कि उसमें जीवन के मार्मिक प्रसंगों की प्रभावपूर्ण प्रतीतियाँ कितनी और कैसी है, और यह भी कि उन प्रसंगों की जीवन में मूल्यवत्ता कितनी है। **'शरणार्थी'** मनुष्य में अपराध बोध कराने वाला संकलन है क्योंकि जिस सांप्रदायिकता के जहर का यह सारा परिणाम है, उस मानवीय संकीर्णता के शिकार हम नही हैं, लेकिन भविष्य में कभी हो सकते हैं।

'शरणार्थी' मानवीय मूल्यों में छिपे अंकुरों की सशक्त अभिव्यक्ति की विलक्षण संतुलित प्रस्तुति है, जिसमें लाचारी, विवशता, हताशा, किंकर्तव्यमूढ़ता, सामूहिकता और आक्रामकता नीचे दब कर रह जाती है।

यह रचना केवल अज्ञेय की ही नहीं बल्कि हिन्दी की, भारतीय साहित्य की या हम कह सकते हैं कि विश्व साहित्य की महत्वपूर्ण रचना है जो पूरी तरह प्रासंगिक है। इसे हम एक जीवंत दस्तावेज के रूप में स्वीकार कर सकते हैं, इसमें कोई दुविधा नहीं है।

किसी भी साहित्यकार की सबसे बड़ी उपलब्धि यह होती है कि उनकी रचनाओं में तात्कालिक परिस्थितियों व देश–काल एवं वातावरण की पृष्ठभूमि परिलक्षित हो। अज्ञेय इस कार्य में निपुण रहे हैं। अज्ञेय ने अपनी रचना **'शरणार्थी'** के माध्यम से विभाजन की त्रासदी एवं सांप्रदायिक वैमनस्यता को दर्शाते हुए हमें उस काल विशेष का युगबोध कराया है।

असल में जो कोई भी कहानीकार मानवीय मन की गहराई से खेलना चाहता है, मनुष्य की प्रवृत्तियों और

संस्कारों के द्वंद्वात्मक संबंधों की जाँच पड़ताल करना चाहता है या आत्मान्वेषण की प्रक्रिया से गुजरते हुए आत्म बोध कराना चाहता है, वह तथ्यों को कहानी के माध्यम से प्रस्तुत करने को बाध्य होता है। मधुरेश के विचारों में – **''अज्ञेय की कहानियों में मनोवैज्ञानिक तथ्यों की प्रचुरता है क्योंकि वह मनुष्य के मानस की पहचान करने वाले साहित्यकार हैं।''**

(मधुरेश, 1994, 123)

'शरणार्थी' में काव्यगत विशेषता, वास्तविक अनुभूति, कालबोध एवं संप्रेषण शैली के आधार पर अज्ञेय की वैचारिक श्रेष्ठता देखी जा सकती है। इनकी रचनाएँ राजनीति एवं सत्ताधारियों पर भी प्रश्नचिन्ह खड़ा करती है।

डॉ० चन्द्रकान्त म० बांदिवडेकर के अनुसार, – **''अज्ञेय जी ने विभाजन संबंधी रचनाओं में धार्मिक अंधड़ से उत्पन्न विभीषिकाओं को चित्रित किया है। मानवीय मूल्यों की ध्वस्तता और सम्प्रदाय से ऊपर उठकर मनुष्य मात्र के प्रति आत्मीयता दर्शाने वाले मूल्यों का सरोकार भी हमें इनकी रचनाओं से प्राप्त होता है।''**

(बंदिवडेकर : 1994, 174)

वर्तमान में भी **'शरणार्थी'** में वर्णित सारी अमानवीयता की पुनरावृति किसी न किसी रूप में हो ही रही है। यह रचना शरणार्थियों के प्रति सहानूभूति पैदा करने में आज भी सफल है तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अपनी प्रासंगिकता सिद्ध करने में पूर्णतः समर्थ हैं।

'शरणार्थी' में अनुभूतियों की प्रामाणिकता अर्थात 'भोगे हुए यथार्थ' का आग्रह देखने को मिलता है। समग्रतः हम कह सकते हैं कि **'शरणार्थी'** में संकलित कविताएँ एवं कहानियाँ देश विभाजन के त्रासदपूर्ण परिस्थितियों का जीवंत प्रलेख हैं।

संदर्भ स्रोतः

अग्रवाल, डॉ० प्रमिला (सं). (1992). भारत विभाजन और हिन्दी कथा सहित्य, इलाहाबादः भारती प्रकाशन।

नगेन्द्र (सं). (2018). हिन्दी साहित्य का इतिहास, दिल्लीः मयुर बुक्स।

पटेल, भोलाभाई (सं). (2009). अज्ञेयः एक अध्ययन, नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन।

बांदिवडेकर, डॉ० चन्द्रकांत म०. (1993). कथाकार अज्ञेय. चंडीगढ़ः हरियाणा साहित्य अकादमी।

सिंह, डॉ० भरत (सं). (2007). कवि कहानीकार अज्ञेय और मुक्तिबोध; संवेदना और दृष्टि, नयी दिल्लीः वाणी प्रकाशन।